तृतीय अध्याय

दुष्यंतकुमार के काव्य का कलात्मक अध्ययन

दुष्यंतकुमार के काव्य का कलात्मक अध्ययन

दुष्यंतकुमार का साहित्य संसार छोटा है । लेकिन जितना भी हैं, उसे व्याकरणिक कसौटियों पर कस कर देखना आवश्यक हैं । दुष्यंत-कुमार का काव्य व्याकरणिक दृष्टि से कितना सशक्त है यह जानने की कोशिश इस अध्याय में की जा रही है ।

रचना विधान :

हर एक वस्तु के अलग-अलग नाम होते हैं, या उसे अलग-अलग नामों से पहचाना जाता है । साहित्य में रचना विधान को भी "शिल्प, कला, विधान विधि नाम से जाना जाता है । शिल्प विधान के कारणही रचना में सुंदरता की सृष्टि होती है । वास्तविक रूप में रचना विधान की विशेष-ताओं का मूर्त रूप धारण करकेही कविता अवतरित होती है । काव्य का यह अंग "रचना कैसी है" इस बात को स्पष्ट करता है ।

आज तक संसार में कोई भी घटना बिना विवाद के खत्म नहीं हुई है । इसे काव्य का यह पहलू भी अपवाद नहीं है । रचना-विधान के तत्वों के बारे में भी दो मत नजर आते हैं । परंपरा के अनुसार इसमें से एक दृष्टिकोण भारतीय हैं, और दूसरा पाश्चात्य । भारतीय विचारकों के अनुसार काव्य में मुख्यत: शब्द, छंद, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति आदि तत्व आते है । पाश्चात्यों के दृष्टिकोण से बिंब, प्रतीक, उपमान, छंद और भाषा यह तत्व आते है । यहाँ एक बात स्पष्ट नजर आती है कि, पाश्चात्य विचारकों द्वारा निर्धारित किए गये काव्य के तत्व भारतीय तत्वों के ही

संशोधित रूप हैं । अत: कवियों के लिए कविता के शिल्प विधान यह पहलू अपनी बात को अधिक स्पष्ट तथा संगत ढंग से कहने के लिए उपयोगी सिध्द होता है ।

शिल्प विधान के इन पहलुओं में से अधिकतर लोग पाश्चात्य तत्वों को ही स्वीकारते हैं । हमारी प्रवृत्ति ही पाश्चिमात्यों का अनुकरण करने की रही है । इस प्रवृति के कारण ही भारतीय कवियों ने भी भारतीय तत्वों की अपेक्षा पाश्चात्य तत्वों को ही अधिक मात्रा में स्वीकार किया है ।

स्वर्गीय दुष्यंतकुमार "नयी कविता" के कवि रहे है । उन्होंने भी काव्य तथा नयी कविता की अनेक विशेषताओं को अपनी कविताओं में समाया है । कुछ नये प्रयोगों को सहारा देकर अन्य कवियों की अपेक्षा अलगाव एवं नयापन लाने की कोशिश की है । उनमें उन्हें कहा तक सफलता मिली है ? इसका विवेचन हम इस अध्याय में करेंगे । अत: शिल्प विधान के इस चरण में प्रतीक, छंद और भाषा आदि का विवेचन किया जायेगा ।

प्रतीक विधान :

डॉ. कैलाश वाजपेयी के अनुसार, "प्रतीक, विस्तार को संक्षिप्त में कहने का माध्यम है ।" [१] अत: इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि, कोई भी लंबी बात प्रतीक की सहायता से संक्षिप्त में लेकिन प्रभावपूर्ण ढंग से कहीं जा सक्ती है । इसे व्यावहारिक या उक्तिपूर्ण भाषा में "गागर में सागर"

---

१) आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प - डॉ. कैलाश वाजपेयी - पृ. ७५

भरने के समान कहा जा सकता है । इसतरह संक्षिप्त में बात कहने की परंपरा हिन्दी साहित्य में पुराने जमाने से चलती रही है । इसे नयी कविता ने भी अपनाया है । यह प्रतीकवाद फ्रान्सीसी प्रतीकवाद से प्रभावित है । नयी कविता के कवियों की एक खासियत रही है, किं उन्होंने हर समय कुछ नयी बातों को ग्रहण किया है । उसी तरह कुछ पुराने, कुछ सर्व सामान्य धरातल के, तथा कुछ जनजीवन से भी प्रतीक इन कवियों ने चुने है ।

नयी कविता के इस चरण में दुष्यंतकुमार भी आ जाते है । उन्होंने भी कुछ परंपरित तथा कुछ नये प्रतीकों कोअपने काव्य में स्थान दिया है । कवि दुष्यंतकुमारने तो सर्व सामान्य जनता के दर्द को अपने काव्य में स्थान दिया है । उनके प्रतीक भी सर्वसामान्य आदमी के धरातल को स्पर्श करते हुए नजर आते हैं । (यहाँ सिर्फ "जलते हुए वन का वसंत" और "साये में धूप" किताबों काही विवेचन किया गया है । क्योंकि अन्य किताबें उपलब्ध नहीं हो पायी है ।)

प्राकृतिक प्रतीक :

प्रतीकों का चुनाव करते समय दुष्यंतकुमार ने मनुष्य जीवन से संबंधित बातें कहने के लिए प्रकृति को प्रतीक रूप में चुना है । इन प्रतीकों में से कवि ने प्रकृति को मानव का प्रतीक बनाया है । इसका प्रमाण "एक श्याम की मन:स्थिति " कविता की ये पंक्तियाँ है -

"तेज नौका
मर्म भेदी चीख भरता हुआ पंछी

- -

बिजलियों से भरा हुआ आकाश ।"[१]

इन पंक्तियों में कवि ने समस्याओं के तूफान में घिरे कवि मन को व्याख्यायित किया है । इस कविता में "नौका" कवि मन का प्रतीक है, "बिजलियों से घिरा आकाश" कवि की समस्याओं का प्रतीक है । अत: यह प्रतीक कवि मन के साथ-साथ जन सामान्य की स्थितिको भी उजागर करते हैं ।

ऐसीही "एक साम्य" कविता में भी प्राकृतिक प्रतीकोंद्वारा अपने मन की समस्याओं को पेश करने का प्रयास कवि ने किया है --

"चारों ओर
काँटेदार, और
पेड़ पौधों से घिरी हुई
गोल और छोटी सी पहाड़ी यहाँ भी है ।" [२]

इन पंक्तियों में "पहाड़ी" उत्पादन या उपलब्धि का प्रतीक, तथा काँटेदार पेड़ पौधे बाधाओं एवं समस्याओं के प्रतीक हैं ।

"सृष्टि की आयोजना" कविता में भी कवि ने कुछ प्राकृतिक प्रतीक चुने है । जिसका प्रमाण ये पंक्तियाँ है --

"न चाँद
न तारे
न सूर्य प्रकाश
आखिर कहाँ साँस लेगा, हमारा अंश ?"[३]

---

१) जलते हुए वन का वसंत, दुष्यंतकुमार, पृ.६२
२) -वही- पृ.७८
३) -वही- पृ.८४

इसमें कवि ने चाँद, सूरज और उसके प्रकाश का न होना दुनिया में किसी भी चीज़ का न होने का प्रतीक चुना है । आखरी पंक्ति को हमारे जीवन के अंत का प्रतीक बनाया है ।

"आती रही याद : इंद्रधनुष्य की वे संप्तरंगी छवियाँ ।" [१]

उपर्युक्त पंक्तियाँ "वर्षा" कविता की है । इसमें कवि ने सुख, खुशी, वैभव का प्रतीक "इंद्रधनुष्य" को चुना है । इसीतरह

"न शीत और न ताप से झूलसे
हुए चेहरों पर आश्वासनों का
सूर्य उगाते है ।" [२]

कहकर सूर्य को आशा और विश्वास के प्रतीक रूप में चुना है ।

कवि दुष्यंतकुमार ने प्रकृति के अनेक प्रतीकों को अपने काव्य में स्थान दिया है । "साये में धूप" गज़ल संग्रह में भी इन प्रतीकों का प्रयोग कविद्वारा किया गया है । अपने देश के लिए "गुलमोहर" का प्रतीक चुना है, जो सुंदरता का प्रतीक है । इसका परिचय इस "शेर" से होता है ।

"जिए तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले
मरे तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए ।" [३]

उसी प्रकार,

"इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है ।" [४]

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ.६९.
२) - वही - पृ.४५.
३) - वही - पृ.१३.
४) - वही - पृ.१६.

इन पंक्तियों में नदी की धार लहरें यह जीवन की गतिशीलता तथा उत्साह के प्रतीक है । जर्जर नाव और ठंडी हवा निराशा एवं बाधाओं के प्रतीक है ।

इनके अलावा "परिंदे अब भी पर तोले हुए हैं" तालाब का पानी बदल दो, दरख्त, बरगद, जंगली फूल आदि प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग करके कवि ने अपनी भावाभिव्यक्ति स्पष्ट की है । जिनके कारण पाठकों पर गहरा असर पड़ता है ।

क्लात्मक प्रतीक :

हर एक व्यक्ति को सारी चीज़े एक साथ आत्मसात नहीं होती । अगर हो भी जाए तो उनके परिणाम में अंतर आता है । उसी तरह दुष्यंतकुमार ने क्लात्मक प्रतीकों को अपने काव्य में अपनाया है। लेकिन उसका प्रमाण कम है । क्लात्मक प्रतीक के माध्यम से अपने दिल की बात कहते हुए कविने 'यह साहस' कविता की इन पंक्तियों में कहा है —

"दीवारे होती हैं,
और लोग आए दिन उनसे टकराते हैं,
बुरी तरह घायल हो जाते हैं,
कई बार गति बिलमा जाती है,
रस्ते खो जाते है ।" [१]

इस पंक्तियों में "दीवार" को एक और बाधाओं के प्रतीक रुप में चुना है । तो अपनी क्लात्मकता का परिचय देते हुए दूसरी ओर उसे

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७७.

परंपरा के प्रतीक रूप में चुना है । उसी तरह

"आप दीवार गिराने के लिए आये थे,
आप दीवार उठाने लगे यह तो हद् है ।" [१]

इन पंक्तियों में परंपराओं का नाश करने आये लोग ही परंपराओं को सँवारने लगे हैं । यह उनके मानसिक परिवर्तन का प्रतीक है । जिसे कवि ने अपनी सुंदर क्लात्मकता से प्रस्तुत किया है ।

अपने गज़ल संकलन "साये में धूप" में भी कवि ने कुछ क्लात्मक प्रतीक चुने है । और इन प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने अपना मंतव्य व्यक्त किया है ।

"खंडहर बचे हुए है, इमारत नहीं रही,
अच्छा हुआ कि सर पे कोई छत नहीं रही ।" [२]

इस "शेर" में उन्होंने "खंडहर" को टूटी हुई मन:स्थिति के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है । इसीतरह,

"इन खंडहरों में होगी तेरी सिसकियाँ जरूर
इन खंडहरों की ओर सफर आप मुड़ गया ।" [३]

इनमें भी "खंडहर" को टूटी हुई आशा का प्रतीक माना है । तथा इमारत और छत को अनुकंपा के प्रतीक रूप में चुना गया है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ५५.
२) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. १८.
३) - वही - पृ. ३८.

जनजीवन से गृहित प्रतीक :

काव्य विषय के अनुकूल जनजीवन से भी कुछ प्रतीकों का सहारा लेकर दुष्यंतकुमार ने अपने काव्य-विषय को सशक्त बनाया है । ऐसे प्रतीक उनके काव्य में बड़ी मात्रा में नजर आते है ।

"तुमने हमेशा मुझे ऐसी लोरियाँ सुनाई
× × × ×
× × × ×
मेरा विवेक तुम्हारे एक संकेत का मोहताज बना रहा ।" [१]

"आत्मालाप"कविता की इन पंक्तियों में कविने "लोरी" को जनजीवन से लेकर उसे आकर्षण का प्रतीक चुना है । विवेक, तथा बुध्दि को आकर्षण के हाथ की कठपुतली का प्रतीक चुना गया है ।

इसीतरह "सवाल" कविता में भी कवि ने प्रतीकों को सही रूप में अपनाया है ।

"मुझे पता नहीं यहाँ किस ऋतु में
कौन सा फूल खिलता है ?
वे लोग जो फूलों को देखकर जीते है कैसे ?" [२]

इन पंक्तियों में "फूल" को आशा का प्रतीक चुना हुआ है । प्रतीकों के इस चरण में विशेष उल्लेखनिय "एक और प्रसंग" कविता की ये पंक्तियाँ है —

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. २६.
२) - वही - पृ. ५३.

"आँखो में भर कर आकाश
और हृदय में उमंग
काँपती उंगलियों में सहज थरथराती हुई
छोटी-सी पतंग
× × × ×
साँवली लकिरों के साँपो ने घेर लिया
कट गयी पतंग
अंधकार का अजगर लील गया
एक एक पंतंग ।" [१]

यहाँ-पतंग को इच्छाओं का प्रतीक, साँप-विभिषिकाओं का प्रतीक और अजगर-निराशा, कुंठा का प्रतीक चुना गया है ।

इसीतरह "सायें में धूप" गज़ल संकलन में भी शायर ने एक-दो जन-जीवन से कुछ प्रतीक चुनकर अपनी बाते स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

"किसे कहें कि छत की मुंडेरों से गिर पड़े
हमने ही खुद पतंग उड़ाई थी शौकियाँ ।" [२]

इस 'शेर' में भी "पतंग" को आशा का प्रतीक तथा छत से गिरना धोखे का प्रतीक चुना गया है ।

छंद विधान :

"अक्षर-अक्षरों की संख्या तथा यति- गति आदि से संबंधित विशिष्ट

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ८०-८१.
२) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. २६.

नियमों से नियोजित पद्य रचना छंद कहलाती है ।" [१] इसतरह छंद की व्याख्या की गयी है । छंद तो कविता का एक व्याकरणिक तत्व है । इसी कारण हर तत्वों की तरह छंद की परिभाषाएँ बदलती गयी है । अलग-अलग कवियों ने नये-नये छंदो की रचना की हैं । कविता को छंद के अनुशासन से छुड़ाने के लिए एक मुक्त छंद नामक छंद का माध्यम भी कविता के लिए प्रयुक्त किया गया । इस छंद के स्रष्टा निराला है । इस छंद में किसी भी तरह का बंधन न होने के कारण इस छंद का सबसे ज्यादा प्रचलन "नयी कविता" में हुआ है ।

कविता को छंद के अनुशासन से छुड़ाने के साथ-साथ कुछ नये छंदो की भी रचना की गयी । उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के विविध छंदो को भी नयी कविता के कवियों ने अपनाया ।

"नयी कविता" के कालखंड में दुष्यंतकुमार भी आते हैं । उन्होंने अन्य कवियों की तरह अपनी कविता के लिए मुक्त छंदों का ही अधिक मात्रा में प्रयोग किया है । कुछ रचनाएँ उर्दू के शेर तथा फारसी के तराने के आधार पर मुक्तक छंद में भी लिखी हैं । ऐसी विविधता पूर्ण काव्य साहित्य के छंद क्षेत्र की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत हैं ।

मुक्त छंद :

"नयी कविता" के कवियोंद्वारा अपनाये गये इस छंद को गद्यवत लिखा जाता है । लय के आधार पर इस छंद के दो भेद किए जाते हैं - लययुक्त

---

१) हिन्दी साहित्य कोष - डॉ. धीरेंद्र वर्मा, पृ. २९०.

मुक्त छंद को गद्यवत लिखा जाता है । लय के आधार पर इस छंद के दो भेद किए जाते हैं - लययुक्त मुक्त छंद तथा लयहीन मुक्त छंद । उसीतरह लययुक्त मुक्त छंद को भी दो उपभेद किए गये है - लय की समानतावाले मुक्त छंद तथा लय की विविधता वाले मुक्त छंद । अत: मुक्त छंद में शब्द और अर्थ दोनों की लय विद्यमान रहती हैं ।

लय की समानता-वाले मुक्त छंद :

लय की समानतावाले मुक्त छंद दुष्यंतकुमार की कविताओं में बड़ी मात्रा में देखें जा सकते हैं । इसके प्रमाण स्वरूप "विदा के बाद : प्रतीक्षा" कविता का यह छंद प्रस्तुत है -

"सिर्फ कल्पनाओं से
सूखी और बंजर जमीन खंरोचता हूँ
जन्म लिया करता है जो (ऐसे हालात में)
उसके बारे में सोचता हूँ
कितनी अजीब बात है कि, आज भी
प्रतीक्षा सहता हूँ मैं ।" [१]

लय की विवि धतावाले मुक्त छंद :

दुष्यंतकुमार ने तो मुक्त छंद के हर एक पहलू को अपने काव्य में स्थान दिया है । उन्होंने अपनी कतिपय कविताओं में लय की विविधतावाले छंद

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७५.

को भी अपनाया है । "मंत्री की मैना" कविता से एक नमुना प्रस्तुत किया जा रहा है --

"भारत यदि भूखा है, होने दे,
वियतनाम जलता है, जलने दे,
व्यर्थ तू झूलसती है
बोल मेरी मैना तुझे क्या दुख है ।" [१]

इन पंक्तियों में शाब्दलय विद्यमान हैं लेकिन अर्थलय की कमी है । अत: इसकारण यह लय की विविधता युक्त मुक्त छंद है ।

लयहीन मुक्तक छंद :

अन्य छंद की तरह दुष्यंतजीने इस छंद को भी अपने काव्य के लिए अपनाया हैं । इस छंद का वाक्य विन्यास गद्यवत होता है । इस छंद को स्पष्ट करती हुई "युध्द और युध्द विराम के बीच "कविता की ये पंक्तियाँ -

"लोग कहते है कि अमुक बुरा है या भला है ।
लोग ये भी कहते है कि आत्मवंचना में
जीवन जीना कला है ।" [२]

उर्दू का "शेर" छंद :

उर्दू भाषा ने हिन्दी साहित्य को लोकप्रिय बनाया । इसका कारण उर्दू "शेर" छंद का हिन्दी काव्य क्षेत्र में बड़ी मात्रा में प्रयोग ही कहा जा

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ५१.
२) - वही - पृ. ४८.

सकता है । यह भी मुक्तक की तरह होते हैं । अत: अधिकांश रूप में इस छंद का प्रयोग गज़ल के लिए ही किया जाता है । हिन्दी गज़ले ५ से १७ और इससे भी अधिक शेरों से युक्त हैं । दुष्यंतकुमार ने तो एक ही गज़ल संग्रह लिखा है । और जो हिन्दी साहित्य में काफी लोकप्रिय हो चुका है । जिसका नाम "साये में धूप" है ।

दुष्यंतकुमार द्वारा लिखे गये गज़लों में भी विभिन्न प्रकार के शेर नजर आते हैं । इसमें कुछ "शेर" में रदीफ (शेर के अंतिम शब्द एक से) और काफिया (अंतिम शब्दों से पहले समान ध्वनिवाले शब्द) प्राय: एक जैसे हैं । इसप्रकार के अनेक "शेर" नजर आते हैं - जिसका प्रमाण -

"हो गयी है पीर-पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए ।" [१]

इस शेर के अतिरिक्त रदीफ और काफिये भिन्न-भिन्न होनेवाले कुछ शेर भी दुष्यंतकुमार ने लिखे है --

"आज यह दीवार परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि, ये बुनियाद हिलनी चाहिए ।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए ।" [२]

इन दो प्रकारों के अतिरिक्त दुष्यंतकुमार की गज़लों में रदीफ एक से लेकिन काफिये भिन्न-भिन्न होनेवाले भी कुछ "शेर" नजर आते हैं । जिसका प्रमाण यह "शेर" है —

---

१) सायें में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.
२) - वही - पृ. ३०.

"मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है ।
दोस्तों ! अब मंच पर सुविधा नहीं है,
आज कल नेपथ्य में संभावना है ।" १

छंद के क्षेत्र में कुछ नये प्रयोग :

"नयी कविता" के कवियों द्वारा कविता के क्षेत्र में अनेक नये-नये प्रयोगोंको स्थान दिया गया है । उसी तरह छंद के क्षेत्र में भी नयी कविता के कवि दुष्यंतकुमार ने भी कुछ नये छंदो कों अपनाकर अपनी काव्य कला की पहचान दी है । उन्होंने "जलते हुए वन का वसंत" कविता संकलन में "चीनी टंका" नामक एक नये छंद की रचना की है ।

"चीनी टंका" :

यह छंद ३ से ५ चरणों में लिखा जाता हैं । लेकिन भारतीय कवियों ने उसके स्वरूप निर्धारण में अपनी आवश्यकता के अनुसार पंक्तियों की संख्या में परिवर्तन करके १० पंक्तियों तक संख्या बढ़ा दी है । इसतरह के छंद की रचना भी दुष्यंतजी ने की है । जिसकी पहचान "पहुँच" कविता है -

"तुम्हारे साथ
देखते-देखते
समुद्र पर पुल बन गया है,

---

१) सायें में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. २७.

उँचे गिरि-शिखरों तक सड़क,
जन संकुल नगरों से दूर निकल आया हूँ
हाथों में थामे तुम्हारा हाथ ।" [१]

अत: अंत में कहा जा सकता है कि, दुष्यंतकुमार ने अपने साहित्य क्षेत्र में छंद योजना का विस्तृत रूप में आयोजन किया है । उन्होंने पुराने छंद से नये - नये छंदो का प्रयोग करके अपनी कविताओं में विविधता लायी है । लेकिन मुक्त छंद का अधिक मात्रा में प्रयोग उनके साहित्य में गद्याभास उत्पन्न कर देता है । उसीतरह अन्य छंदो में से उर्दू के "मुक्तक और शेर" छंदो का सफलता पूर्वक प्रयोग करके अपने को एक सशक्त तथा सफल कवि सिध्द किया है । अत: ये सारी बातें उनके छंद विधान के क्षेत्र की सिध्दि का प्रमाण है ।

काव्य की भाषा :

साहित्य में भाषा को अनन्य साधारण महत्व है । भाषा विचारों की वाहिनी कहलायी जाती है । भाषा के माध्यम से ही इन्सान अपने विचार, अपनी भावनाएँ दूसरों के सामने अभिव्यक्त करता रहता है । लेकिन सामान्य लोगों की भाषा और काव्य भाषा में अंतर है । कवि की भाषा में अनुभूति और संवेदना विद्यमान होती है, जिसका असर पाठकों पर बड़ी मात्रा में होता है ।

अन्य काव्यांगो की तरह भाषा भी काव्य-शिल्प का एक अभिन्न एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है । अन्य शिल्पगत पहलूओं की तरह भाषा के क्षेत्र में

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७३.

भी "नयी कविता" के कवियों ने परिवर्तन ला दिया है । इसके बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए - कैलाश वाजपेयी ने कहा है कि, "शिल्प-विधि के अन्य अंगों के ही समान प्रयोग वादी कविता तक आते - आते काव्य की भाषा शैली में युगांतकारी परिवर्तन आ गया है ।" [१]

शोध प्रबंध के इस अध्याय में भाषा के स्वरूप का निर्धारण करना ही हमारा लक्ष्य होगा । काव्य भाषा संबंधी मत के आधार पर हम कवि दुष्यंत-कुमार की काव्य भाषा का विवेचन करेंगे ।

डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक" द्वारा प्रकाशित शोध प्रबंध की प्रस्तावना में कहा गया है कि "नये कवियों की अपेक्षा दुष्यंतकुमार की भाषा में वैयक्तिकता अधिक है पर उनकी कविताओं में पाठक को पहचानासा स्वर और आत्मीय सी भाषा नजर आती है ।" [२] अन्य कवियों की भाँति दुष्यंत-कुमार ने अपनी काव्य भाषा में वैयक्तिकता को अपनाया है । उनकी कविताओं में पाठक को पहचाना-सा स्वर और आत्मीय सी भाषा नजर आती है । उन्होंने अपने व्यक्ति को समष्टि के समक्ष समर्पित किया है । उनकी काव्य भाषा में सरलता, स्पष्टता एवं सहज बोधगम्यता नजर आती है न कि जटिलता और औपचारिकता का अंश । उन्होंने अपनी कविता को यथार्थ की भूमि पर लाने के लिए यथार्थवादी और व्यावहारिक भाषा का अधिक प्रयोग किया है । अपने भावों, विचारों को व्यक्त करने के लिए उन्होंने अक्षरों में हेर फेर करके, विराम चिन्हों में बदलाव ला कर, कुछ जगहों लाईनों (सीधी तिरछी) द्वारा भी काम चलाया है । यह उनकी काव्य कला का एक अनोखा नमूना नजर आता है । कहीं-कहीं अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने कोष्टकों में उसका विवेचन दिया है । उन्होंने यह प्रयोग अपने भावों की तीव्रता बढ़ाने के लिएही किये हैं । और उसमें उन्हें सफलता भी मिली है ।

---

१) आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प-कैलाश वाजपेयी, पृ. ३०२.
२) दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य-डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक"-प्रस्तावना.

उपर्युक्त विवेचन दुष्यंतकुमार की काव्य भाषा का सर्व सामान्य परिचय कराता है । उनके काव्य में आये कुछ गुण तथा कुछ दोष आदि का भी अध्ययन करना हमारे लिए आवश्यक है । उन्होंने अपनी काव्य भाषा को कुछ विशेषता युक्त बनाया है । जिसका विवेचन यहाँ किया जा रहा है ।

विशेषताएँ :

हर एक बात टेढ़ी रूप में नहीं कहीं जा सकती । कुछ बातें ऐसी भी होती है कि, जिसके लिए सरलता का प्रयोग आवश्यक होता है । इसी वजह से दुष्यंतजी ने भी सरलतम भाषा का ही प्रयोग किया है, जिससे कि उनके भावों को समझाने के लिए पाठकों को कोई कठिनाई महसूस नहीं होती । उन्होंने अपनी काव्य भाषा को आम-आदमी की भाषा को चुना है । ऐसा करके उन्होंने जनभाषा को काव्य भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित कराया है । इस बात का प्रमाण "साये में धूप" की गज़ले ही दे सकती है ।

"न हो कमीज तो पाँवोंसेपेट ढंक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब है, इस सफर के लिए ।" [१]

इसतरह भाषा में सरलता का प्रयोग हुआ तो है । उन्होंने अपनी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सार्थक उपमाओं का भी चुनाव किया हैं । उन्होंने देश के मूल्य परिवर्तन के लिए "पनघट" और "सुंदरियों" की [२] उपमा, तथा राजनैतिक दलों के लिए "भेडिये" [३] की उपमा दी है । साथ

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. १३.
२) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ९.
३) - वही - पृ. ४४.

ही दुष्यंतकुमार की बाकंपन युक्त अभिव्यक्ति तो भाषागत उपलब्धि है । इसका प्रमाण "नया-नया पिता का बुढ़ापा था" यह "बसंत आ गया" [१] कविता की पंक्ति ही है ।

"सायें में धूप" गज़ल संकलन तो दुष्यंतकुमार की अभिव्यंजना कौशल्य का एक अनुपम नमुना ही है । इस बात को इस संकलन का एक "शेर" ही साबित करता है -

"यहाँ तक आते-आते सूख जाती है कई नदियाँ
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा ।" [२]

दुष्यंतकुमार को भाषा का धनी कहा गया है । इसी वजह से उन्होंने अपनी काव्य भाषा में तीखेपन को भी अपनाया है । इसतरह की काव्य भाषा उनके काव्य को प्रभावपूर्ण बनाने में सफल हुई है । इसका उदाहरण प्रस्तुत है --

"एक नीम का स्वाद मेरी भाषा बना ।" [३]

इन विशेषताओं के बावजूद उनकी कुछ कविताएँ गेय भाषा में लिखीं हुई है । भाषा का ये गुण उन्हें गीतों की परिधि में ले जाता है । तथा दुष्यंतकुमार को गीत-शैली के कवि बनाता है । जैसे --

"कौन यहाँ आया था
कौन दिया बाल गया
सूनी घर देहरी में
ज्योति-सी उजाल गया ।" [४]

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ३१.
२) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. १५.
३) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ११.
४) - वही - पृ. ६७.

अत: अंत में सार रूप से कहा जा सकता है कि, उन्होंने अपने काव्य के लिए भाषा के अनेक रूपों को अपनाया है । जो उन्हें "नयी कविता" के कवि सिध्द करने के लिए काफी हैं ।

दुष्यंतकुमार के काव्य में अनेक गुणों तथा विशेषताओं का अविष्कार हुआ है । जो उन्हें एक अच्छे कवि के रूप में हमारे सामने पेश करते है । लेकिन हर इन्सान में कुछ गुणों के साथ-साथ दोष भी होते हैं । उसीतरह कवि दुष्यंतकुमार के काव्य में भी विशेषताओं के साथ कतिपय दोष भी नजर आते है । जो उनके काव्य तथा काव्य भाषा दोनों को कमजोर बनाते है ।

दोष -

साहित्य को गुणों के कारण श्रेष्ठता मिलती है, और दोषों के कारण कुछ हानियाँ भी पहुँचती है । इसीतरह दुष्यंतकुमार का काव्य भी कुछ कमियों तथा दोषों को लेकर भी अवतरित हुआ है । इन दोषों के कारण कवि के व्याकरणिक पहलूओं को ठेस पहुँचती है । कवि दुष्यंतकुमार की काव्य भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सरल, सहज बोधगम्य और सजीव शब्दों को ही स्थान मिला है । लेकिन कुछ जगहों पर कवि का यह व्याकरणिक बंधन टूटकर भावावेश में बह गया है । इसी कारण भाषा में बदलाव भी आ गया है । कुछ जगह लिंग, वचन आदि बातों पर से उनका बंधन टूटा है और उन्हें गलत रूपों में अपनाया गया है । इसबात को स्पष्ट करनेवाले ये दोष है - जो लिंग संबंधी है --

कई जगहों पर कवि ने "भाषा" स्त्रीलिंग शब्द का प्रयोग "पुल्लिंग" रूप में किया है - इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है --

"एक नीम का स्वाद मेरी भाषा बन गया ।" [१]

इसके अतिरिक्त कवि ने एक-दो जगहों पर वचन संबंधी दोष भी उत्पन्न किए है । हिन्दी साहित्य में " जल" शब्द तो एक वचन में ही प्रयुक्त होता है । लेकिन यहाँ उसका प्रयोग बहुवचन में हो गया है --

"मैंने मूर्तियों पर जल भी चढ़ायें हैं ।" [२]

इसीतरह,

"अब इस नुमाईश की छवियाँ
आँखों में गड़ती है ।" [३]

इन पंक्तियों में प्रयुक्त "छवियाँ" शब्द गलत याने बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है । जो सदैव "एक वचन" में प्रयुक्त होता है ।

उपर्युक्त दोष लिंग और वचन के क्षेत्र में नजर आते है । कुछ स्थानों पर कवि ने कविता लिखते समय अपने वाक्यो' को अधूरा छोड़ा है । तो कई स्थानों पर बीच-बीच में डैश भी लगवायें हैं । जो कवि के भावों की गहमता बढ़ाने में मद्रद करते है । फिर भी अगर भाषा की दृष्टि से तथा व्याकरणिक दृष्टि से देखा जाय तो ये बातें भाषागत कमजोरी साबित करती है ।

"मैं जीता हूँ, जीने के लिए विवश होता हूँ ...
सुबह सुबह
चाय की टेबिल पर, समाचार पत्रों में,
जब कि लोग .....।" [४]

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ११.
२) - वही - पृ. १२.
३) - वही - पृ. २०.
४) - वही - पृ. २४.

अत: अपने वाक्यों को अधूरा छोड़ना, डैश लगवाना ये सारीबातें तो भावों की गहनता, तथा प्रगाढ़ता के लिए ही कवि ने अपनायी है । इसके अलावा उन्होंने कई जगहों पर अपनी काव्याभिव्यक्ति में कोष्टको का भी इस्तेमाल करके उसके माध्यम से अपना भाव स्पष्ट किया है । जैसे -

सिर्फ कल्पनाओं से
सूखी और बंजर जमीन को खरोंचता हूँ
जन्म लिया करता है जो (ऐसे हालात में)
उसके बारें में सोचता हूँ ।" [१]

इसीतरह अब तक हमने कविता के हर एक क्षेत्र का निरिक्षण किया है । कुछ कविताएँ तो गद्य रूप का ही एक नमुना बनी है । इसके अनेक उदाहरण "एक कंठ विषपायी" काव्य नाटक में मिलते हैं । परंतु "जलते हुए वन का वसंत" काव्य संकलन में भी इस तरह के गद्यवत प्रयोग नजर आते है । जो कविता को गद्य रूप में प्रकट करता हुआ दिखाई देता है ।

"लोग
समाचार पत्रों के पन्नों में,
सरसरी नजर से
युध्द, विद्रोह, सत्ता परिवर्तन, अन्न संकट
और
देशी विदेशी समस्याएँ पढ़ते हैं ।" [२]

यह त्रूटियाँ तो भाषा के क्षेत्र में महसूस की जाती है । लेकिन

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७५.
२) - वही - पृ. २२.

शब्दों के संबंध से ही भाषा का निर्माण होता है ।

शब्द योजना :

अत: विविध भाषाओं से लिए गये शब्दों द्वारा बनी भाषा के बारे में जानना हमारे लिए आवश्यक है । कवि दुष्यंतकुमार ने तो अनेक भाषाओं से शब्द लेकर अपनी काव्याभिव्यक्ति के लिए उनका उपयोग किया है । इसतरह अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनाकर कवि ने अपनी काव्य भाषा बनायी है । इन भाषाओं में प्रमुख है - अंग्रेजी, अरबी, फारसी, संस्कृत और देशज भाषा और उनके शब्द । इस आधारपर दुष्यंत-कुमार की काव्य भाषा के निम्नलिखित भेद किये जाते है ।

अंग्रेजी बाहुल्य भाषा :

वर्तमान युग पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करता हुआ दिखाई देता है । हर एक क्षेत्र में हमारे देश के लोग पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है । उसी तरह दुष्यंतकुमार ने भी अपने काव्य संकलनों में कुछ अंग्रेजी शब्दों को अपनाया है । जो कि, दैनिक-जीवन में हर एक इन्सान द्वारा अपनायें जाते हैं । इसका प्रमाण यह काव्य पंक्तियाँ सुद है --

"तालों और 'टार्चों' को ।
× × × ×
उमर की 'वर्ष' पर रखे सामान पर
× × × ×
तुम टी.टी. नगर के एक बंगले में ।" [१]

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ.१५, १६, २५.

इन पंक्तियों में टार्च, वर्ष, टी.टी. आदि शब्द तो अंग्रेजी भाषा से आये हुए है, जिनका प्रयोग सामान्य जनता हर दिन करती है ।

उर्दू, अरबी व फारशी बाहुल्य भाषा :

स्वर्गीय दुष्यंतकुमार द्वारा लिखित "साये में धूप" गज़ल संग्रह तो लोकप्रिय हो चुका है । लेकिन गज़ल के लिए "उर्दू" के "शेर" छंद का प्रयोग करना पड़ता है । इसी वजह से इस संकलन की भाषा में उर्दू, अरबी, फारशी भाषा के शब्दों का आना स्वाभाविक है । लेकिन इन शब्दों को अपनाते समय कवि ने उन्हें व्यावहारिक रूप में अपनाया है । जैसे --

"अगर खुदा न करें सच ए ख्याब हो जाए
तेरी सहर हो मेरा आफ्ताब हो जाए ।" [१]

इस शेर में अपनाया गया सहर शब्द "शाह" शब्द का व्यावहारिक रूप है । इसके अतिरिक्त कुछ शेर हिन्दी-उर्दू भाषा मिश्रित भी है ।

"जिंदगी एक खेत है
और साँसे जरीब है ।" [२]

अत: यह कहा जा सकता है कि, "साये में धूप" गज़ल संकलन तो उर्दू, फारसी और अरबी भाषा के अनेक शब्दों से भरा हुआ है । लेकिन हर एक का उदाहरण देना मुश्किल हैं । अत: ऐसे शब्दों को ही यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, जो उपर्युक्त भाषाओं से आयें हैं - जन्नत, दीवार, जिस्म, दरख्त, निज़ात, गनीमत, चिथड़ा, आसीन, मयस्सर, अलक, इश्तहार, पीर, चिराग, शाम, सियासत, दरीजे, सल्तनत, जबान, कमीज आदि । जैसे

---

१) सायें में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ४०.
२) - वही - पृ. ३७.

शब्दों को अपनाकर कवि ने एक अच्छा कार्य किया है कि हिन्दी को और भाषा के शब्दों से परिचित कराया है । तथा शब्दों की परिधि में वृध्दि करने का प्रयास किया है । लेकिन निज़ात, तमद्दुन, अजमत, दरख्त, शब्दों को पढ़ने तथा उनको समझाने में पाठकों को दिक्कत होती है ।

संस्कृत शब्दों से मिश्रित सामान्य भाषा :

स्वर्गीय दुष्यंतकुमार ने अपने काव्य के लिए सामान्य भाषा का उपयोग किया है । उन्होंने अपने विचार व्यक्त करने तथा भावों को स्पष्ट करने के लिए आम-आदमी की भाषा का व्यवहार किया है । इसलिए उन्होंने संस्कृत शब्द मिश्रित भाषा का रूप अपनाया है । जैसे --

"चाक्षुण्ण प्रतीतिमयी धरती
जो सामने पड़ी है ।" [१]

इसीतरह कवि ने संस्कृत के तत्सम और तद्भव दोनों रूपों को अपनाया है । इसके उदाहरण स्वरूप - अक्षुण्ण, विक्षात, आमंत्रित, निस्तरंग, मिथ्या, निशपद, शाप, दंशान आदि शब्द लिए जा सकते हैं ।

सामान्य बोलचाल की भाषा :

दुष्यंतकुमार की संपूर्ण काव्य भाषा में सामान्य बोलचाल की भाषा का निर्वाह हुआ है । उन्होंने अपने काव्य के लिए अनपढ़ लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा का अधिक उपयोग किया है । इसके साथ-साथ शहरी और ग्रामीण शब्दों को एक साथ रखकर भाषा में सामान्यता लाने का प्रयास किया है । नीचे की काव्य पंक्तियाँ इसे स्पष्ट करती है --

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ५६.

"मैं धक्का-मुक्की क्यों करता हूँ।" [१]

"रात और दिन खाये जाती है यही हाय-हाय।" [२]

"एक फूँक से बन गया
सूरज समझा जाने-वाला चिराग ।" [३]

मुहावरें :

स्व. दुष्यंतकुमार ने अपने साहित्य में साहित्य के हर एक पहलू को छुआ और उजागर किया है । इसीतरह मुहावरों को भी उन्होंने अपने काव्य में अपनाकर उनका महत्व बढ़ाया है । मुहावरों के व्यापार के कारण ही उनकी काव्य भाषा में अर्थवत्ता समायी है । दुष्यंतकुमार ने सदैव नवीनता को अपनाया है । इसलिए उनके मुहावरें भी नितांत नवीन है । उनमें सहजता का गुण समाया है न कि उन्हें जबरदस्ती से लादा गया है । इस बात को स्पष्ट करनेवाले कुछ उदाहरण --

"कि मैं बिस्तर पर पड़े-पड़े ही करवटे बदलता रहा।" [४]

"अपराधी की तरह हाथ मलता रहा ।" [५]

"झाक मारकर गाता रहा ।" [६]

"अपनी परिस्थिति से बचकर आकाश ताक सकते थे।" [७]

इसीतरह आश्वासनों का सूर्य उगाना, भेडियें सा टूटना, डोंडी

---

१) जलते हुए वन का वसंत – दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.
२) – वही – पृ. ५५.
३) – वही – पृ. ५५.
४) – वही – पृ. २६.
५) – वही – पृ. २७.
६) – वही – पृ. २८.
७) – वही – पृ. २३.

पिटवाना, आदमी को भूनकर खाना, आँख मलना आदि मुहावरों का प्रयोग भी यथा स्थान किया है ।

कतिपय नविनताएँ :

जिसतरह दुष्यंतकुमार ने नवीनतम् बातों को अपने काव्यमें अपनाया है । उसी तरह कुछ स्वयं की ओर से भी नव निर्मिती करके अपने कवित्व को उजागर किया है । और अपनी बौध्दिकता का परिचय दिया है । उन्होंने कुछ ऐसे शाब्दों का प्रयोग किया है, जिनका अर्थ दूरस्थ कल्पना से ही व्यंजित होता है । जैसे —

"सिर्फ एक मेरी कमंद है
तू मुझे उठा ।" [१]

इस पंक्ति में लिए गये "कमंद" शाब्द का अर्थ गोहसे बँधी रस्सी से है । अत: दूरस्थ कल्पना से ही इसका यह अर्थ निकालनासंभव है ।

इसीतरह नवीनता का एक और उदाहरण जो कि काव्य भाषा में सूत्र-शैली का प्रचलन है ।

"जिंदगी एक खेत है
और साँसें जरीब है ।" [२]

इसतरह सूत्र-शैली का प्रयोग कवि की अनुठी उपलब्धि है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. २८.
२) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ७०.

अत: अंत में कहा जा सकता है कि, दुष्यंतकुमार की भाषा में सहजता, अर्थवता, व्यंजनाशक्ति, प्रतीकात्मकता, आदि गुण समाये है । साथ ही सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग और भावों के अनुकूल शब्द चयन ये कवि की विशेषताएँ रही हैं । लेकिन कई जगहों पर गद्याभास नजर आता है । जो भाषा की गतिशिलता में बाधा उत्पन्न करता है । फिर भी कवि दुष्यंतकुमार की भाषा विशिष्टता से प्रमाणित लगती है ।

निष्कर्ष :

अल्पकालीक साहित्य सृजन के बावजूद हिन्दी साहित्य में अपनी कलात्मक प्रतिमा की अमीट छाप छोड़नेवाले दुष्यंतकुमार का काव्य क्लात्मक प्रौढता की निशाणी है । जहाँ तक उनके काव्य के रचना विधान का संबंध है उसपर पाश्चात्य का प्रभाव स्पष्ट है । कविने अपने काव्य में प्राकृतिक, क्लात्मक, एवं जनजीवन में प्रचलित प्रतिकों को अपनाकर काव्य को मनोहारी बनाया है । छंद के क्षेत्र में वैचित्र्य, का प्रयोग दुष्यंतकुमार की विशेषता रही है । त्रिपदी, चीनी टँका, गज़ल जैसे प्रयोग उनकी प्रयोग धार्मिता को सिध्द करते हैं । विषयों के अनुसार भाषा का भावुक और गंभीर प्रयोग उनमें निहित मेधावि क्लाकार का परिचय दिलाता है । दुष्यंतकुमार की कविता की भाषा विषयानुकूल बदलती नजर आती है । सरल, बोधगम्य, से लेकर व्यंग्यात्मक, चुभीली भाषा के कितने ही उदाहरण उनके काव्यमें यत्र-तत्र बिखरे हैं । अरबी, फारसी, अंग्रेजी, उर्दु, भाषा के शब्दों का वैविध्य अनेक भाषाओं के होनेवाले उनके अधिकार को स्पष्ट करता है । हालाकि, उनकी भाषा में लिंग, वचन के कुछ दोष जरूर नजर आते हैं, परंतु वहीं दूसरी ओर सुंदर मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग दोषों से निर्मित कमियों को भर देता है । इसका कारण दुष्यंतकुमार का समग्र काव्यक्ला की कसौटी पर निखरा साबित होता है। उनकी कविता में पाये जानेवाले ये क्लात्मक परचे उन्हें नयी कविता के एक प्रभावी कवि बनाते हैं ।

.....